राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम- डॉ0 ममता जोशी

अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति हो स्वाभिमानः दीपक शर्मा

स्वाधीनता संग्राम पर आधारित मेवाड़ विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी का हुआ समापन

चित्तौड़गढ़/गंगरार (अमित कुमार चेचानी)। सभी भारतवासियों को अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति स्वाभिमानी होने की आवश्यकता है। उक्त बातें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि रुक्टा के राष्ट्रीय महामंत्री दीपक शर्मा ने कही। उन्होंने आगे कहा कि आखिर हम अपने सही इतिहास के प्रति संदेह में क्यों हैं। आज भारतीय समाज का मनोबल दृढ़ करने की जरूरत है। बतौर मुख्य वक्ता क्षेत्रीय संगठन मंत्री छगन लाल बोरा ने कहा कि वीर सावरकर जैसे कई परिवारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी कई पीढ़ियों को स्वाहा कर दिया पर इतिहास में उनका नाम कहीं दर्ज ही नहीं है।

बतौर विशिष्ट अतिथि साहित्य परिषद राजस्थान की प्रदेश संयुक्त सचिव डॉ0 ममता जोशी ने इस पँक्ति %क्या करोगे इतिहास जानकर यह अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद है% के साथ दुर्भावनापूर्वक लिखे गए इतिहास पर व्यंग्य करते हुए कहा कि स्वाधीनता संग्राम मैं सेनानियों साहित्यकारों और पत्रकारों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया परंतु अंग्रेजों के शासन काल में लिखी गई गलत इतिहास परंपरा में इनका जिक्र नहीं है। यह हमें नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम रही। उन्होंने राजस्थान के प्रमुख पत्रकारों का जिक्र करते हुए कहा की पथिक जनरल व्यास हरिदेव जोशी दुर्गादास रामनारायण अखिलेश्वर प्रसाद जैसे पत्रकारों ने राजस्थान की पत्रकारिता के जरिए स्वाधीनता संग्राम में अपने कलम की धार से अंग्रेज़ी हुकूमत की नींद उड़ाई। उन्होंने जनजाति समाज के योगदान का भी जिक्र किया। संगोष्ठी में बतौर विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी ने अपने ऐतिहासिक समुद्र यात्रा का अनुभव साझा किया। संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रति कुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता संग्राम में जिन लोगों के योगदान का ज़िक्र इतिहास के पन्नों में हैं, हम उन्हें अवश्य सम्मान दें पर जिनका ज़िक्र नहीं है उन्हें न भूलें। यही सही समय है कि हम नये सिरे से लिखे जा रहे इतिहास लेखन में उनके योगदान का ज़िक्र करें।

इसके पहले प्रथम सत्र में डॉ0 मदन मोहन टांक, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत, भारत शर्मा, डॉ0 सोनिया सिंगला, डॉ0 पंकज राठौड़, रूबी पालीवाल, मिथिलेश सोलंकी, रमन रिद्दी, डॉ0 साईश्वरी कौल और डॉ0 ममता जोशी ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। संचालन राजेश भट्ट और डॉ0 योगेश व्यास ने किया। धन्यवाद ज्ञापन भारतीय इतिहास संकलन एवं रुक्टा के विभाग प्रमुख डॉ0 पीयूष शर्मा ने किया। इस अवसर पर मेवाड़ विश्वविद्यालय के अकादमिक निदेशक ध्वजकीर्ति शर्मा, उपकुलसचिव दीप्ति शास्त्री, प्रो0 चित्रलेखा सिंह, लक्ष्मीनारायण जोशी, घनश्याम, डॉ0 निखिल गर्ग, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत सहित भारतीय संकलन समिति, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय संघ, रुक्टा के पदाधिकारीगण, मेवाड़ विश्वविद्यालय के शिक्षक व शोधार्थियों सहित विद्यार्थी उपस्थित रहें।

अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति हो स्वाभिमानः दीपक शर्मा

राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम : डॉ0 ममता जोशी

स्वाधीनता संग्राम पर आधारित मेवाड़ विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी का हुआ समापन

न्यूज ज्योति

चित्तौड़गढ़/गंगरार। सभी भारतवासियों को अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति स्वाभिमानी होने की आवश्यकता है। उक्त बातें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि रुक्टा के राष्ट्रीय महामंत्री दीपक शर्मा ने कही। उन्होंने आगे कहा कि आखिर हम अपने सही इतिहास के प्रति संदेह में क्यों हैं। आज भारतीय समाज का मनोबल दृढ़ करने की जरूरत है। बतौर मुख्य वक्ता क्षेत्रीय संगठन मंत्री छगन लाल बोरा ने कहा कि वीर सावरकर जैसे कई परिवारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी कई पीढ़ियों को स्वाहा कर दिया पर इतिहास में उनका नाम कहीं दर्ज ही नहीं है। बतौर विशिष्ट अतिथि साहित्य परिषद राजस्थान की प्रदेश संयुक्त सचिव डॉ0 ममता जोशी ने इस पँक्ति क्या करोगे इतिहास जानकर यह अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद है के साथ दुर्भावनापूर्वक लिखे गए इतिहास पर व्यंग्य करते हुए कहा कि स्वाधीनता संग्राम मैं सेनानियों साहित्यकारों और पत्रकारों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया परंतु अंग्रेजों के शासन काल में लिखी गई गलत इतिहास परंपरा में इनका जिक्र नहीं है। यह हमें नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम रही। उन्होंने राजस्थान के प्रमुख पत्रकारों का जिक्र करते हुए कहा की पथिक जनरल व्यास हरिदेव जोशी दुर्गादास रामनारायण अखिलेश्वर प्रसाद जैसे पत्रकारों ने राजस्थान की पत्रकारिता के जरिए स्वाधीनता संग्राम में अपने कलम की धार से अंग्रेज़ी हुकूमत की नींद उड़ाई। उन्होंने जनजाति समाज के योगदान का भी जिक्र किया। संगोष्ठी में बतौर विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी ने अपने ऐतिहासिक समुद्र यात्रा का अनुभव साझा किया। संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रति कुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता संग्राम में जिन लोगों के योगदान का ज़िक्र इतिहास के पन्नों में हैं, हम उन्हें अवश्य सम्मान दें पर जिनका ज़िक्र नहीं है उन्हें न भूलें। यही सही समय है कि हम नये सिरे से लिखे जा रहे इतिहास लेखन में उनके योगदान का ज़िक्र करें। इसके पहले प्रथम सत्र में डॉ0 मदन मोहन टांक, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत, भास्त शर्मा, डॉ0 सोनिया सिंगला, डॉ0 पंकज राठौड़, रूबी पालीवाल, मिथिलेश सोलंकी, रमन रिद्दी, डॉ0 साईश्वरी कौल और डॉ0 ममता जोशी ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। संचालन राजेश भट्ट और डॉ0 योगेश व्यास ने किया। धन्यवाद ज्ञापन भारतीय इतिहास संकलन एवं रुक्टा के विभाग प्रमुख डॉ0 पीयूष शर्मा ने किया। इस अवसर पर मेवाड़ विश्वविद्यालय के अकादमिक निदेशक ध्वजकीर्ति शर्मा, उपकुलसचिव दीप्ति शास्त्री, प्रो0 चित्रलेखा सिंह, लक्ष्मीनारायण जोशी, घनश्याम, डॉ0 निखिल गर्ग, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत सहित भारतीय संकलन समिति, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय संघ, रुक्टा के पदाधिकारीगण, मेवाड़ विश्वविद्यालय के शिक्षक व शोधार्थियों सहित विद्यार्थी उपस्थित रहें।

स्वाधीनता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय संगोष्ठी का समापन

राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम: डॉ. जोशी

गंगरार, 25 सितम्बर (जसं.) । सभी भारतवासियों को अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति स्वाभिमानी होने की आवश्यकता है। आखिर हमें अपने सही इतिहास के प्रति संदेह में क्यों है, आज भारतीय समाज का मनोबल दृढ़ करने की जरुरत है।

यह बातें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि रुक्टा के राष्ट्रीय महामंत्री दीपक शर्मा ने कही। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता क्षेत्रीय संगठन मंत्री छगन लाल बोरा ने कहा कि वीर सावरकर जैसे कई परिवारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी कई पीढ़ियों को स्वाहा कर दिया, पर इतिहास में उनका नाम कहीं दर्ज ही नहीं है। विशिष्ट अतिथि साहित्य परिषद राजस्थान की प्रदेश संयुक्त सचिव डॉ. ममता जोशी ने इस पंक्ति क्या करोगे इतिहास जानकर यह

अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद है, के साथ दुर्भावना पूर्वक लिखे गए इतिहास पर व्यंग्य करते हुए कहा कि स्वाधीनता संग्राम में सेनानियों साहित्यकारों और पत्रकारों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। लेकिन अंग्रेजों के शासन काल में लिखी गई गलत इतिहास परंपरा में इनका जिक्र नहीं है। यह हमें नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम रही है। उन्होंने राजस्थान के प्रमुख पत्रकारों का जिक्र करते हुए कहा कि पथिक जनरल व्यास हरिदेव जोशी, दुर्गादास, रामनारायण, अखिलेश्वर प्रसाद जैसे पत्रकारों ने राजस्थान की पत्रकारिता के जरिए स्वाधीनता संग्राम में अपने कलम की धार से अंग्रेज़ी हुकूमत की नींद उड़ाई। उन्होंने जनजाति समाज के योगदान का भी जिक्र किया।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी ने अपने ऐतिहासिक समुद्र यात्रा का अनुभव साझा किया। संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रति कुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल ने कहा कि स्वाधीनता संग्राम में जिन लोगों के योगदान का जिक्र इतिहास के पन्नों में है, हम उन्हें अवश्य सम्मान दें पर जिनका जिक्र नहीं है उन्हें न भूलें। यही सही समय है कि हम नये सिरे से लिखे जा रहे इतिहास लेखन में उनके योगदान का जिक्र करें।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में डॉ. मदन मोहन टांक, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत, भारत शर्मा, डॉ. सोनिया सिंगला, डॉ. पंकज राठौड़, रूबी पालीवाल, मिथिलेश सोलंकी, रमन रिद्दी, डॉ. साईश्वरी कौल और डॉ. ममता जोशी ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का संचालन राजेश भट्ट और डॉ. योगेश व्यास ने किया। भारतीय इतिहास संकलन एवं रुक्टा के विभाग प्रमुख डॉ. पीयूष शर्मा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मेवाड़ विश्वविद्यालय के अकादमिक निदेशक ध्वज कीर्ति शर्मा, उप कुल सचिव दीप्ति शास्त्री, प्रो. चित्रलेखा सिंह, लक्ष्मीनारायण जोशी, घनश्याम, डॉ. निखिल गर्ग, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत सहित भारतीय संकलन समिति, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय संघ रुक्टा के पदाधिकारी, मेवाड़ विश्वविद्यालय के शिक्षक व शोधार्थियों सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मेवाड़ हलचल

स्वाधीनता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय संगोष्ठी का समापन

राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम: डॉ. जोशी

मंगलवार, 25 सितम्बर (जसं.) [illegible]